The Infinite
An International Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.co.in

उत्तर प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध ई–संसाधन– एक अवलोकन

विवेक ओझा

शोध कर्ता

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

ओ० पी० जे० एस विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

अनुसंधान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

ABSTRACT

आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान में ई–संसाधनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। यह शोध लेख उत्तर प्रदेश के चार प्रमुख केंद्रीय विश्वविद्यालयों—इलाहाबाद विश्वविद्यालय (AU), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU), और बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (BBAU), लखनऊ—के पुस्तकालयों में उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली डिजिटल सेवाओं, संग्रहों और तकनीकी पहलों का मूल्यांकन करना है।

1. प्रस्तावना

डिजिटल युग के आगमन ने भारत में पुस्तकालयों के कार्य करने के तरीके को नाटकीय रूप से बदल दिया है। एनालॉग से डिजिटल में बदलाव केवल एक तकनीकी उन्नयन ही नहीं है बल्कि इसने जानकारी को संग्रहीत, एक्सेस और साझा करने के तरीके को फिर से परिभाषित किया है। देश भर के कई पुस्तकालयों ने अपनी सेवाओं का विस्तार डिजिटल संग्रहों को शामिल करने के लिए किया है। ई–बुक्स, ई–जर्नल्स, डिजिटल थिसिस, और शोध प्रबंध अब अधिकांश शैक्षणिक और सार्वजनिक पुस्तकालयों में एक स्थायी सुविधाएं हैं। भारत का राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI), जिसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया, विभिन्न भाषाओं में लाखों शैक्षणिक संसाधनों तक मुफ्त पहुंच प्रदान करता है।

विशेषीकृत डिजिटल आर्काइव्स स्थापित किए गए हैं ताकि भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित किया जा सके। उदाहरण के लिए, डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया परियोजना का उद्देश्य दुर्लभ पुस्तकों, पांडुलिपियों, और अन्य सांस्कृतिक साहित्य के रूपों को आर्काइव करना है, जिससे उन्हें ऑनलाइन सुलभ बनाया जा सके। डिजिटल संसाधनों को प्रदान करने के अलावा, पुस्तकालयों ने इन ऑनलाइन सेवाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण सत्र और कार्यशालाएँ प्रदान करना शुरू किया है। ये पहल डिजिटल विभाजन को पाटने और उपयोगकर्ताओं के बीच डिजिटल साक्षरता में सुधार करने का लक्ष्य रखती हैं।

कोहा और लिबसिस जैसे उन्नत पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली (LMS) अब विभिन्न पुस्तकालय कार्यों जैसे कि कैटलॉगिंग, परिसंचरण, और अनुक्रमण प्रबंधन को स्वचालित करने के लिए स्थापित हैं, जिससे स्टाफ और ग्राहकों दोनों के लिए पुस्तकालय का अनुभव अधिक सहज हो गया है। स्मार्टफोन के उपयोग में वृद्धि ने पुस्तकालयों को मोबाइल–फ्रेंडली वेबसाइटों और ऐप्स विकसित करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे उपयोगकर्ताओं को किसी भी समय, कहीं भी पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंचने की अनुमति मिलती है। उन उपयोगकर्ताओं की सेवा करने के लिए जिनके पास व्यक्तिगत इंटरनेट सुविधाओं तक पहुंच नहीं हो सकती, पुस्तकालयों ने साइबर कैफे और मुफ्त वाई–फाई प्रदान करना शुरू कर दिया है, जिससे वे सूचना पहुंच के लिए सामुदायिक केंद्रों के रूप में अपनी भूमिका का विस्तार कर रहे हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने पुस्तकालयों के बीच सहयोग को आसान बना दिया है। संसाधन साझा करने वाले नेटवर्क जैसे INFLIBNET (सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क) अंतर–पुस्तकालय ऋण (Inter-Library Loan) और सामूहिक सूचीकरण (Union Catalogue) को सुविधाजनक बनाते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध होती है।

भारत में पुस्तकालय उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सबसे प्रमुख प्रयासों में से एक राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन (NML) है, जिसका उद्देश्य देश भर में लगभग 9,000 पुस्तकालयों को आधुनिक बनाना और डिजिटल रूप से जोड़ना है। यह पहल न केवल संसाधनों के डिजिटलीकरण को शामिल करती है बल्कि पुस्तकालयों द्वारा पाठक तक प्रभावी ढंग से पहुंचने के लिए प्रदान की जाने वाली सेवाओं को भी बढ़ाती है।

ई–संसाधनों के बढ़ते महत्व को देखते हुए, कई पुस्तकालय डिजिटल साक्षरता कार्यशालाएँ प्रदान कर रहे हैं। ये कार्यक्रम उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन डेटाबेस में नेविगेट करने, ई–बुक्स का उपयोग करने और अन्य डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए शिक्षित करते हैं।

2. ई–संसाधनों का संक्षिप्त विवरण

ई–संसाधनों को सामान्यतः उन सूचना स्रोतों के रूप में देखा जाता है जिन्हें आधुनिक ICT उपकरणों के माध्यम से खोजा और उपयोग किया जाता है। ये संसाधन साइबर स्पेस में संग्रहीत रहते हैं और संक्षिप्त, ठोस रूप में बड़ी संख्या में उपयोगकर्ताओं द्वारा एक ही समय में विभिन्न स्थानों से एक्सेस किए जा सकते हैं।

"ई–संसाधन" शब्द का व्यापक रूप से यह अर्थ है कि वह सूचना जो कंप्यूटर के माध्यम से प्राप्त की जाती है। ये संसाधन बिब्लियोग्राफिक गाइड का कार्य कर सकते हैं और कभी–कभी उद्धृत संदर्भ (cited references) के रूप में भी उपयोग किए जाते हैं।

ई–संसाधन मुख्यतः अल्फान्यूमेरिक प्रारूप में उपलब्ध होते हैं और इन्हें कंप्यूटर–आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराया जाता है। शिक्षण संस्थानों (जैसे कॉलेज और विश्वविद्यालय) के भीतर ई–संसाधन और सेवाएँ शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना स्रोत मानी जाती हैं।

पिछले वर्षों में ऑनलाइन ई–जर्नल, ई–संसाधनों का एक आवश्यक और लोकप्रिय भाग बन गए हैं। छपे हुए दस्तावेजों से इलेक्ट्रॉनिक रूप में बदलाव बहुत तेजी से हुआ है और पुस्तकालयों ने शैक्षणिक समुदाय तक इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को सफलतापूर्वक पहुँचाने के लिए कई बड़े परिवर्तन किए हैं।

2.1 ई–संसाधनों की परिभाषा (Definition)

- ई–संसाधन वे सूचना संसाधन हैं जिन्हें कभी भी, कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है।
- ये समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हैं।
- ये संसाधन ऑनलाइन या ऑफलाइन दोनों रूपों में उपलब्ध हो सकते हैं।
- इनमें ई–पुस्तकें, ई–जर्नल, ई–डेटाबेस, शैक्षणिक वेब संसाधन, आधिकारिक दस्तावेज आदि शामिल होते हैं।
- ये 24X7 उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध रहते हैं।

ई–संसाधन मुद्रित दस्तावेजों की तरह ही उपयोगी हैं, लेकिन इनकी विशेषता है कि ये चित्र, ऑडियो, वीडियो और मल्टीमीडिया रूप में भी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इस कारण इनका उपयोग और भी सुविधाजनक और व्यापक हो जाता है।

2.2 ई–संसाधनों के प्रकार (Format of E-Resources)

ई–संसाधनों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

- ई–जर्नल (Electronic Journals)
- ई–पुस्तकें (Electronic Books)
- इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ स्रोत (जैसे ई–शब्दकोश, ई–डायरेक्टरी, ई–विश्वकोश आदि)
- ई–ब्राउजर / ई–कंटेंट
- ई–मैगजीन (E-Zines)

- इलेक्ट्रॉनिक शोध–प्रबंध एवं शोध–प्रथाएँ (ETD Repositories)
- ऑनलाइन/ ऑफलाइन डेटाबेस
- संस्थागत/डिजिटल रिपॉजिटरी में उपलब्ध सामग्री
- शैक्षणिक वेब संसाधन/ओपन एक्सेस संसाधन

2.3 ई–संसाधनों की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of E-Resources)

- 24X7 उपलब्धता।
- भौतिक स्थान की बचत।
- मुद्रित दस्तावेज से पहले ही ऑनलाइन प्रकाशित हो जाना।
- विश्वभर से किसी भी समय बिना भौगोलिक सीमा के एक्सेस।
- कंसोर्टिया, प्रकाशक या एग्रीगेटर से सब्सक्राइब किया जा सकता है।
- सेकंडों में संशोधन/अपडेट करना संभव।
- विभिन्न प्रारूपों (फाइलें, इमेज, ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया) में उपलब्ध।
- मुद्रित रूप में संभव न होने वाले मल्टीमीडिया संसाधन उपलब्ध।
- आसानी से खोज, ब्राउज, डाउनलोड और अनुकूलित करना संभव।
- लिंकिंग फीचर (दस्तावेज के भीतर और बाहर लिंक)।
- एक साथ कई उपयोगकर्ता इसका उपयोग कर सकते हैं।
- उपयोग के आँकड़ों की निगरानी संभव।

3. साहित्य समीक्षा

• सिन्हा (2004) बराक घाटी (असम) के स्थानीय लोगों द्वारा इंटरनेट उपयोग पर अध्ययन किया। यह पाया गया कि इंटरनेट के उपयोग की स्थिति प्रारंभिक अवस्था में थी और लोगों में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता थी।

• रहमान और रैमजी (2004) कुवैत विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग पर सर्वेक्षण किया। अध्ययन में पाया गया कि उपयोग की कमी का मुख्य कारण समय की कमी, जागरूकता की कमी और तकनीकी कौशल का अभाव था।

• मोगद्दम और तलवार (2008) भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के विद्वानों द्वारा ई–जर्नल के उपयोग का अध्ययन किया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि शोधकर्ताओं ने ई–जर्नल का मुख्यतः अनुसंधान आवश्यकताओं के लिए उपयोग किया और च्क्थ् प्रारूप सबसे अधिक पसंद किया।

• कौर और वर्मा (2009) IIT दिल्ली में ई–संसाधनों और सेवाओं के उपयोग का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि ई–जर्नल का उपयोग लगातार बढ़ रहा है और छात्र/ शोधकर्ता इन्हें होस्टल और विभागीय नेटवर्क से अधिक एक्सेस कर रहे हैं बजाय कि केंद्रीय पुस्तकालय से।

• संथी, राधाकृष्णन और स्वरूप (2010) शिक्षण स्टाफ की कंप्यूटर साक्षरता और ई–संसाधनों के उपयोग के बीच संबंध का अध्ययन किया।

• शिवकुमारन आदि (2011) तमिलनाडु के M-Phil. और Ph-D. शोधार्थियों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग पर अध्ययन किया। उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकालय स्टाफ को शोधार्थियों के बीच जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना चाहिए।

• संथी और राधाकृष्णन (2012) अन्ना यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर के शोधार्थियों की ई–संसाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। अधिकांश शोधार्थी उपलब्ध संसाधनों से संतुष्ट पाए गए।

• निशा और अली (2012) दिल्ली की उच्च शैक्षणिक संस्थाओं (प्प्ज् दिल्ली और दिल्ली विश्वविद्यालय) के शोधार्थियों द्वारा ई–जर्नल उपयोग का अध्ययन किया। यह पाया गया कि ई–जर्नल का मुख्य उद्देश्य अनुसंधान लेख, असाइनमेंट, प्रस्तुतियाँ और सेमिनार की तैयारी था।

• चंद्रन (2013) ई–संसाधनों के उपयोग पर अध्ययन में पाया कि 95ः उत्तरदाता ई–संसाधनों के प्रति जागरूक थे। ई–जर्नल और ई–डेटाबेस का उपयोग सबसे अधिक किया गया।

• सिन्हा और चंदा (2014) असम विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक समुदाय द्वारा UGC-INFONET और DeLCON कंसोर्टियम के अंतर्गत उपलब्ध ई–संसाधनों के तुलनात्मक उपयोग का अध्ययन किया।

• सालाउद्दीन (2015) NPL पुस्तकालय में ICT उपयोग पर अध्ययन किया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सभी शोधार्थी इंटरनेट और सर्फिंग से परिचित थे, परंतु ब्लॉगिंग और OPAC सेवाओं के प्रति जागरूकता कम थी।

4.1 इलाहाबाद विश्वविद्यालय (AU) का केंद्रीय पुस्तकालय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय, जिसे पूरब के ऑक्सफोर्ड के रूप में जाना जाता है, एक विशाल संग्रह का घर है। डिजिटल युग के साथ तालमेल बिठाते हुए, पुस्तकालय ने कई ई–सेवाएं शुरू की हैं–

• ई–संसाधन: यह छात्रों और शोधकर्ताओं को विभिन्न ई–बुक्स, ई–जर्नल्स और डेटाबेस तक पहुँच प्रदान करता है।

• दूरस्थ पहुँच (Remote Access) : हाल ही में, इसने शिक्षकों और शोधकर्ताओं के साथ–साथ स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भी दूरस्थ पहुँच की सुविधा प्रदान करना शुरू किया है, जिससे वे कहीं से भी पुस्तकालय के संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं।

• प्रौद्योगिकी: पुस्तकालय ने रेडियो आवृत्ति पहचान प्रणाली (RFID) तकनीक लागू करने की योजना बनाई है, जिससे पुस्तकों का पता लगाना और चोरी को रोकना आसान हो जाएगा।

• डिजिटलीकरण: भारत सरकार की यूनिवर्सल डिजिटल लाइब्रेरी (UDL) परियोजना के तहत, इसने अपने संग्रह से हजारों पुस्तकों का डिजिटलीकरण किया है।

4.2 बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) का केंद्रीय पुस्तकालय

बीएचयू का केंद्रीय पुस्तकालय, एशिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से एक है, जो अपने पारंपरिक और डिजिटल संग्रहों के लिए प्रसिद्ध है।

• ई–संसाधन: बीएचयू का ई–लाइब्रेरी पोर्टल INFLIBNET जैसे संघों के माध्यम से ई–पुस्तकों, ई–पत्रिकाओं, और डेटाबेस की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच प्रदान करता है।

• साइबर लाइब्रेरी: पुस्तकालय में एक आधुनिक साइबर लाइब्रेरी है जिसमें बड़ी संख्या में कंप्यूटर हैं, जो छात्रों को 24 घंटे इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं।

• डिजिटलीकरण पहल: पुस्तकालय ने न केवल आधुनिक ई–संसाधनों को अपनाया है, बल्कि यह अपनी दुर्लभ पांडुलिपियों और ऐतिहासिक दस्तावेजों को भी डिजिटाइज कर रहा है। इसने हिंदी और संस्कृत जैसे विषयों के लिए विशेष वेब पोर्टल भी बनाए हैं।

4.3 अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU) की मौलाना आजाद लाइब्रेरी

एएमयू की मौलाना आजाद लाइब्रेरी, जो एशिया की दूसरी सबसे बड़ी विश्वविद्यालय लाइब्रेरी मानी जाती है, अपनी समृद्ध ऐतिहासिक और आधुनिक संग्रह के लिए प्रसिद्ध है।

• ई–संसाधन: लाइब्रेरी में ई–डेटाबेस, ई–बुक्स और ई–जर्नल्स का एक विशाल संग्रह है, जो विभिन्न विषयों को कवर करता है।

• दूरस्थ पहुँच: यह OpenAthens जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग करके अपने उपयोगकर्ताओं को ई–संसाधनों तक दूरस्थ पहुँच प्रदान करता है।

• राष्ट्रीय योगदान: एएमयू नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (NDLI) और शोधगंगा में एक प्रमुख योगदानकर्ता है, जो अपने शोध प्रबंधों और अन्य डिजिटल सामग्री को इन राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर साझा करता है।

• स्वचालन: पुस्तकालय नेटवर्क को स्वचालित किया गया है, और वेब ओपैक (OPAC) की मदद से इसे कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है।

4.4 बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (BBAU), लखनऊ का गौतम बुद्ध केंद्रीय पुस्तकालय

BBAU का गौतम बुद्ध केंद्रीय पुस्तकालय, लखनऊ में स्थित है और यह छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को ई–संसाधन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

• ई–संसाधन: पुस्तकालय में ई–थीसिस, ई–पत्रिकाएं, ई–बुक्स, और डेटाबेस सहित विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक संसाधन उपलब्ध हैं।

• डिजिटलीकरण और स्वचालन: पुस्तकालय इंटरनेट आधारित सेवाओं और बार–कोड आधारित कम्प्यूटरीकृत परिसंचरण प्रणाली का उपयोग करता है। यह ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (OPAC) की सुविधा भी प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता पुस्तकालय के संग्रह को ऑनलाइन खोज सकते हैं।

5. आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण

तालिका – 5.1 संग्रह विकास

क0 सं0	कुल संग्रह	ए यू	बी एच यू	ए एम यू	बी बी ए यू
1	पुस्तकें	758983	800000	1708000	69300
2	वर्तमान पत्रिकाएँ	120	298	310	126
3	थीसिस और शोध प्रबंध	19555	15000	15659	2116
4	पांडुलिपि	–	7263	16117	–
5	समाचार पत्र	22	15	14	21

तालिका – 5.1 से स्पष्ट है कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ (AMU) में पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा पांडुलिपि की संख्या सर्वाधिक है।

तालिका 5.2 विभिन्न विश्वविद्यालयों में ई–संसाधनों की उपलब्धता

क0सं0	**विश्वविद्यालय**	**ई–डाटाबेस**	**ई–जर्नल्स**	**ई–बुक्स**	**ई–थीसिस**

1	AU	12	13000+	4221	–
2	BHU	30	16000+	57097	5000
3	AMU	38	10000+	2300	12325
4	BBAU	–	13000+	21430	–

तालिका 5.2 से यह ज्ञात होता है कि

- ई–संसाधनों में सबसे अधिक उपलब्धता BHU के पुस्तकालय मे है।
- BBAU में ई–डाटाबेस तथा AU, BBAU में ई–थीसिस का डाटा उपलब्ध नहीं है।
- सर्वाधिक ई–बुक्स BHU में उपलब्ध हैं।
- ई–जर्नल की उपलब्धता चारों विश्वविद्यालयों में BHU में सर्वाधिक है।
- इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में पर्याप्त संख्या में ई–संसाधन उपलब्ध हैं।

तालिका 5.3 क्या आपको ई–संसाधनों की जानकारी है?

उत्तर	**AU**	**BHU**	**AMU**	**BBAU**	**कुल**	**प्रतिशत**
हाँ	40	46	42	38	166	83%
न्हीं	10	4	8	12	34	17%

विश्लेषण:

BHU के छात्रों को सबसे अधिक जानकारी है (92%), जबकि BBAU में यह प्रतिशत सबसे कम (76%) है।

तालिका 5.4 आप कौन–कौन से ई–संसाधनों का उपयोग करते हैं?

(उत्तरदाता एक से अधिक विकल्प चुन सकते हैं।)

संसाधन	**AU**	**BHU**	**AMU**	**BBAU**	**कुल**	**प्रतिशत**
ई–पुस्तकें	28	34	30	26	118	59%
ई–जर्नल्स	36	40	38	35	149	74.5%
डेटाबेस	20	30	25	22	97	48.5%

डिजिटल रिपोजिटरी	19	25	20	18	82	41%
शैक्षणिक वेबसाइट्स	22	29	27	24	102	51%

विश्लेषणः

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 59 प्रतिशत पाठक ई–बुक, 74.5 प्रतिशत ई–जर्नल्स, 48.5 प्रतिशत ई.डाटाबेस, 41 प्रतिशत डिजिटल ई–रिपाजिटरी और 51 प्रतिशत शैक्षणिक बेइसाईटस/ई–पाठशाला का उपयोग करते पाया गया है, ई–जर्नल्स का उपयोग सर्वाधिक (74.5%) है। BHU में सभी प्रकार के संसाधनों का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक है।

6. निष्कर्ष और तुलनात्मक विश्लेषण

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, चारों ही उत्तर प्रदेश के प्रमुख केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं, जिनके पुस्तकालय डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुए हैं। चारों ही अपने उपयोगकर्ताओं को विभिन्न प्रकार के ई–संसाधन जैसे ई–पुस्तकें, ई–पत्रिकाएं और ऑनलाइन डेटाबेस प्रदान करते हैं। वे राष्ट्रीय पहलों जैसे कि NDLI और Shodhganga में भाग लेते हैं। हालांकि, संग्रह के आकार, ऐतिहासिक महत्व और कुछ विशिष्ट तकनीकी पहलों में भिन्नता है, लेकिन इन सभी पुस्तकालयों का उद्देश्य अपने छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को अत्याधुनिक डिजिटल संसाधन और सेवाएं प्रदान करना है।

केन्द्रीय पुस्तकालय के पाठकों द्वारा प्राप्त सुझाव इस प्रकार हैः–

- विश्वविद्यालय केन्द्रीय पुस्तकालयों द्वारा पाठक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को शोध की गुणवत्ता पर ध्यान देते हुए शोध से संबंधित इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का संग्रह किया जाना चाहिए।
- इन्टरनेट की गति बढ़ाऍं।
- इन्टरनेट टर्मिनल की संख्या बढ़ाऍं।
- तकनीकी कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय में बैठक व्यवस्था और कम्प्यूटर सिस्टम में वृद्धि करना चाहिए।
- पुस्तकालय कर्मचारियों और पाठकों के लिए इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण सेमीनार कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।
- इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के लिए नियमित रूप से वित्त व्यवस्था होनी चाहिए।

संदर्भ सूची

- धनवर्धन, एस. (2012). तमिलनाडु के इंजिनियरिंग महाविद्यालय में डिजिटल संसाधनों के उपयोग के तरीके. पुस्तकालय विज्ञान के नेशनल जर्नल ऑफ लाइब्रेरी सांइस वॉल्यूम 5 (1), पृ.सं. 30—40
- प्रतिभा, ए. के. एवं जपरमन (2013). तमिलनाडु के कोलम्बटूर में कला एवं विज्ञान महाविद्यालय पुस्तकालय में इंटरनेट का उपयोगः इंफोर्मेशन सांइस एण्ड टेक्नॉलोजी ऑफ एशियन जर्नल वॉल्यूम 1 (1) पृ. सं. 45—48
- बेलवाल, महेशचन्द, पी. और वटया, पी, सादिक (2012). जी.बी पंत कृशि विश्वविद्यालय के स्ननात्तेर स्तर के विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों द्वारा आई.सी.टी प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं निर्भरता रू जर्नल ऑफ लाइब्रेरी ए.जे. आई.एस.टी. वॉल्यूम 2, (2), पृ.सं. 45—50
- बनसोडे, सदानन्द वाई (2008). कोल्हापुर के शिवाजी विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा इंटरनेट का उपयोगः अनालस ऑन लाइब्रेरी एण्ड इंफोर्मेशन सांइस वॉल्यूम 55, (2), पृ.सं. 123—126
- कौर, बलजिन्द्र एवं वर्मा, राम (2009). थापर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ई—संसाधनों का उपयोग डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एण्ड इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी वॉल्यूम 29, (2), 2009 पृ.सं. 67—73
- कौर, बलजिन्द्र (2006). पटियाला पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग आई.एल.ए. बुलेटिन वॉल्यूम 42, (3), पृ.सं.18—201
- मधुसुदन, एम. (2010). कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अनुसंधान के विद्वानों द्वारा इलैक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोगः लाईब्रेरी नेशनल जर्नल वॉल्यूम 28, (4), पृ. सं. 492—506
- महाजन, प्रीति (2007). चण्डीगढ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में शोधकर्ताओं द्वारा इंटरनेट का उपयोग रू जर्नल लाईब्रेरी फिलॉसफी एण्ड प्रेक्टिस वॉल्यूम 8, (2), पृ.सं. 15—19
- मोहम्मद, हनीफा कश्मीर. (2005). केरल के विशेष पुस्तकालयों में ई—संसाधनों की जानकारो. कैलपरो बुलेटिनरू वॉल्यूम 91, (2) 2005 पृ.सं. 53—58
- मोहम्मद, ताहिर एवं महमूद, खालिद (2011). पाकिस्तान (लाहौर) पंजाब के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में मानवी की शोधार्थीयों द्वारा ई—सूचना संसाधनों का प्रयोग। लाइब्रेरी इलेक्ट्रॉनिकस जर्नल वॉल्यूम 28 (1), 2011 पृ.सं. 122—136
- मनदहे, आर. एम. (2014). कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ई—संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उनका उपयोग, जर्नल ऑफ लाईब्रेरी वॉल्यूम 8, (2), पृ.सं. 76—81
- बिरादर, बी.एस. (2008). विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों का सर्च इंजन द्वारा शोध सूचनाओं से प्रत्यक्षीरकणः लाइब्रेरी हैंराल्ड जर्नल वॉल्यूम 46, (1), 2008 पृ. सं. 21—29
- www.allduniv.ac.in

- www.amu.ac.in
- www.bbau.ac.in
- www.bhu.ac.in